National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 28-04-2025, Accepted: 29-05-2025, Published: 13-06-2025
Volume 10, Issue 2, 2025, Page No. 68-69

प्रयागराज के घाटों पर एक संस्मरण: कुंभ मेला– आस्था, संस्कृति और मानवता का संगम

दरदी गोस्वामी
वनस्पति विज्ञान विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम, भारत

सारांश
यह लेख 2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में की व्यक्तिगत यात्रा और अनुभवों का वर्णन करता है। यह लेख महाकुंभ के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों पर प्रकाश डाला गया है। ने इस विशाल आयोजन के दौरान अपनी भावनाओं, अनुभवों और सीखों को साझा किया है। लेख में गंगा नदी के तट पर विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, साधुओं से संवाद और श्नेत्र कुंभश जैसी सामाजिक सेवा पहलों का भी विवरण है। अंत में, ने इस अनुभव के माध्यम से भारत की विविधता में एकता के विषय पर अपने विचार व्यक्त करता है।

मूल शब्दः महाकुंभ, प्रयागराज, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक सेवा, गंगा नदी, धार्मिक अनुष्ठान, भारतीय दर्शन

कुंभ मेला, भारत की एक प्राचीन और महत्वपूर्ण आध्यात्मिक परंपरा है, जो हर 12 वर्ष में चार पवित्र स्थानों – प्रयागराज (इलाहाबाद), हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित होता है (Parashar, 2013)।[4] इन चार स्थानों पर लगने वाले कुंभ मेलों में प्रयागराज में आयोजित होने वाला कुंभ 'महाकुंभ' कहलाता है, जो लाखों तीर्थयात्रियों को मोक्ष की अभिलाषा में पवित्र नदियों के संगम पर स्नान करने के लिए आकर्षित करता है (Bhardwaj, 1983)।[1] इसके अतिरिक्त, प्रत्येक छह वर्ष में इन्हीं चार स्थानों पर 'अर्ध कुंभ' का भी आयोजन होता है।

कुंभ मेले की ऐतिहासिक जड़ों की बात करें तो, इसका उद्गम वैदिक काल से माना जाता है, हालांकि इसके वर्तमान स्वरूप का विकास मध्यकाल में हुआ। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसकी शुरुआत समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ी है, जिसमें देवताओं और असुरों के बीच अमृत कलश के लिए संघर्ष हुआ था और अमृत की कुछ बूँदें इन चार स्थानों पर गिरी थीं, जिससे ये स्थान पवित्र हो गए (Mac Gowan, 2019)।[3] ऐतिहासिक अभिलेखों में, चीनी यात्री ह्वेनसांग (Xuanzang) के सातवीं शताब्दी के विवरणों में प्रयागराज में होने वाले एक बड़े धार्मिक समागम का उल्लेख मिलता है, जिसे कुछ इतिहासकार प्रारंभिक कुंभ मेलों से जोड़कर देखते हैं (Trautmann, 2006)।[7] मुगल काल और उसके बाद के विभिन्न शासकों के समय में भी कुंभ मेलों का आयोजन जारी रहा, जिसने इसकी धार्मिक और सामाजिक महत्ता को और अधिक सुदृढ़ किया।

वर्ष 2025 का प्रयागराज महाकुंभ एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आयोजन था, जिसके लिए व्यापक स्तर पर तैयारियां की गई थीं। यह मेला, जो जनवरी से मार्च 2025 के बीच आयोजित हुआ, लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करने में सफल रहा (Times of India, 2024)। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, इस महाकुंभ में स्वच्छता, सुरक्षा और आवास जैसी सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया था (The Hindu, 2024)।[5] यह भी अनुमान लगाया गया था कि इस आयोजन से स्थानीय अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिला (Economic Time 2024)।[2] 'SHoDH भारत' के इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से इस ऐतिहासिक और आध्यात्मिक समागम का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना एक अद्वितीय अवसर था, जिसका वर्णन यह लेख आगे प्रस्तुत करता है। यह अनुभव न केवल व्यक्तिगत स्तर पर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान किया, बल्कि कुंभ मेले की विशालता और सांस्कृतिक महत्व को भी समझने में सहायक रहा।

महाकुंभ का आमंत्रण और प्रयागराज में आगमन

2025 की वह जनवरी, जब मैंने सोशल मीडिया पर महाकुंभ के बारे में सुना, मेरे भीतर एक अवर्णनीय उत्साह जाग उठा था। प्रयागराज के पवित्र संगम तट पर आयोजित होने वाले इस विशाल धार्मिक और सांस्कृतिक समागम का हिस्सा बनना मेरे लिए एक स्वप्न जैसा था। मेरे मन में कई वर्षों से कुंभ दर्शन की एक प्रबल इच्छा थी, और इस बार, सौभाग्य से, 'SHoDH भारत' के माध्यम से मुझे यह अद्वितीय अवसर प्राप्त हुआ। उनका महाकुंभ, प्रयागराज में इंटर्नशिप कार्यक्रम वास्तव में मेरे लिए ईश्वर का दिया हुआ वरदान था।

उन दिनों, रेलगाड़ियाँ भीड़ से खचाखच भरी हुई थीं, मानो पूरा देश ही इस महायज्ञ में शामिल होने को आतुर हो। पर मेरे भाग्य ने साथ दिया, और मुझे प्रयागराज के लिए आरक्षण मिल गया। 26 जनवरी, 2025 को जब मेरे कदम प्रयागराज की पावन धरती पर पड़े, तो एक अजीब सी शांति ने मुझे घेर लिया। स्टेशन से बाहर निकलते ही हवा में एक अलग ही महक थी, जो कहीं न कहीं आध्यात्मिकता से सराबोर थी। वातावरण, यहाँ तक कि हवा भी, एक गहरी आध्यात्मिक ऊर्जा से स्पंदित प्रतीत होती थी। शहर की सामान्य आपाधापी के बावजूद, कुंभ क्षेत्र में कदम रखते ही एक सुकून का एहसास हुआ।

शिविर में जीवन और इंटर्नशिप की शुरुआत

शोध भारत द्वारा प्रदान की गई व्यवस्था, 'गंगा समग्र', सेक्टर 9 में स्थित थी, जहाँ हमें ठहरने की सुविधा मिली थी। यह शिविर गंगा के बहुत करीब था, और हर सुबह वहाँ से आने वाली पवन में गंगाजल की शीतलता और पवित्रता महसूस होती थी। इंटर्नशिप 27 जनवरी से शुरू हुई, और पहला दिन ही हमारे लिए सीखने और अनुभव करने का एक अद्भुत अवसर था। हमने विभिन्न सेक्टरों का दौरा किया, जहाँ कुंभ की विशालता और इसकी अप्रतिम व्यवस्था को देखकर विस्मय होता था। हजारों अस्थायी संरचनाएँ, भोजनशालाएँ, अस्पताल, सुरक्षा चौकियाँ – यह सब एक सुनियोजित शहर जैसा था, जो कुछ ही महीनों के लिए जीवंत हो उठता है।

हम पैदल ही शंकराचार्य आश्रम की ओर बढ़े। हर कदम के साथ, मैं स्वयं को इस विशाल और प्राचीन भारतीय परंपरा के करीब पा रही थी। आश्रम में, हमें आध्यात्मिकता के अनेक पहलुओं और भारतीय दर्शन के गहरे सिद्धांतों के बारे में जानने को मिला। वहाँ के शांत वातावरण और साधुओं के सहज ज्ञान ने मेरे मन में कई नए प्रश्न जगाए और कई पुराने विचारों को नई दिशा दी।

एक मार्मिक अनुभव और प्रेरणा

वापसी में, मैंने कुछ ऐसा देखा जिसने मेरे हृदय को भीतर तक छू लिया। साठ वर्ष से अधिक आयु की कुछ महिलाएँ, अपने सिर पर भारी सामान लादे, नंगे पैर ही सेक्टरों में चल रही थीं। उनके चेहरे पर कोई थकान नहीं थी, बल्कि एक दृढ़ संकल्प और गहरी आस्था का भाव स्पष्ट झलक रहा था। उन्हें देखकर मुझे अपनी स्वयं की तुलनात्मक स्थिति पर विचार करने को मजबूर होना पड़ा। मैं, जो एक आरामदायक आवास में ठहरी थी, जिसके पास हर तरह का सहारा था, फिर भी कभी–कभी छोटी–मोटी असुविधाओं की शिकायत कर बैठती थी। इन वृद्ध महिलाओं की आध्यात्मिकता के प्रति अटूट निष्ठा और अदम्य शारीरिक शक्ति ने मुझे एक बहुत बड़ा सबक सिखाया। उनकी भक्ति, उनका समर्पण – वह मेरे लिए प्रेरणा का एक विशाल स्रोत बन गया। उस पल मैंने महसूस किया कि सच्ची आस्था और समर्पण ही इंसान को ऐसी चुनौतियों से पार पाने की शक्ति देता है।

अस्वस्थता और आत्मचिंतन

दुर्भाग्यवश, अगले दिन, 28 जनवरी को मैं अस्वस्थ हो गई और इंटर्नशिप में भाग नहीं ले पाई। मैंने अपने शिविर में आराम किया, और इस एकांत ने मुझे पिछले दिन के अनुभवों को आत्मसात करने का समय दिया। गंगा समग्र शिविर की शांति और आसपास के मंत्रों की धीमी ध्वनि ने मेरी आत्मा को भी शांत किया।

मौनी अमावस्या का स्नान और साधुओं से भेंट

29 जनवरी का दिन, महाकुंभ का सबसे महत्वपूर्ण और पावन दिनों में से एक था – मौनी अमावस्या। इस दिन लाखों श्रद्धालु गंगा में स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं। सुबह–सुबह, अँधेरे में ही हम गंगा के घाटों की ओर चल पड़े। ठंडी हवा चल रही थी, लेकिन लोगों का उत्साह अविश्वसनीय था। गंगा में डुबकी लगाना मेरे लिए एक अविस्मरणीय क्षण था। बर्फीले पानी की ठंडक मेरी हड्डियों तक उतर गई, लेकिन इसके साथ ही एक अद्भुत पवित्रता और ऊर्जा का अनुभव हुआ। उस क्षण, ऐसा लगा मानो मैंने अपने भीतर के सभी बोझ और संदेह धो डाले हों। यह सिर्फ एक शारीरिक स्नान नहीं था, बल्कि आत्मा का एक शुद्धिकरण था। चारों ओर श्हर हर गंगेश के जयकारे गूँज रहे थे, और उस सामूहिक आस्था की शक्ति ने मुझे अभिभूत कर दिया।

शाम को, हमें कुछ साधुओं के साक्षात्कार करने का अवसर मिला। मौनी अमावस्या के कारण वे सभी बहुत व्यस्त थे, लेकिन फिर भी कुछ साधुओं ने हमारे सवालों का जवाब देने के लिए समय निकाला। उनकी बातें गहन ज्ञान और जीवन के प्रति एक अलग दृष्टिकोण से भरी थीं।

नेत्र कुंभ और सामाजिक सेवा

अगले दिन, 30 जनवरी भी मेरे लिए बहुत सीखने वाला था। इसी दिन, मुझे 'नेत्र कुंभ' के बारे में जानने और उसे देखने का अवसर मिला। यह एस. एफ. एस. और अन्य संगठनों द्वारा शुरू की गई एक अद्भुत पहल थी, जहाँ वे हजारों श्रद्धालुओं को निःशुल्क नेत्र स्वास्थ्य जाँच प्रदान कर रहे थे। महाकुंभ केवल धार्मिक स्नान का पर्व नहीं था, बल्कि यह सेवा, स्वास्थ्य और सामाजिक चेतना का भी संगम था। नेत्र कुंभ जैसे उपक्रमों ने मुझे कुंभ के एक नए आयाम से परिचित कराया, जहाँ धर्म और मानव सेवा एक–दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

दैनिक समीक्षा और शिविर का माहौल

हर रात, हम 'SHoDH' के सभी इंटर्न एक साथ बैठते थे। ये हमारी समीक्षा और अगले दिन की योजना की चर्चा के सत्र होते थे। हमारा आदर्श वाक्य था – "पहले से योजना बनाना और विवरणों में योजना बनाना।" इन चर्चाओं ने हमें न केवल अपने कार्य को बेहतर ढंग से करने में मदद की, बल्कि इसने हमें एक–दूसरे के करीब भी लाया। शिविर में रात भर आस–पास के शिविरों से मंत्रोच्चार की ध्वनि आती रहती थी, जो एक अद्भुत और शांतिपूर्ण वातावरण बनाती थी। यह ध्वनि, हल्की–हल्की हवा के साथ मिलकर, मुझे एक आध्यात्मिक स्वप्नलोक में ले जाती थी।

विदाई और विविधता में एकता का अनुभव

31 जनवरी, हमारी इंटर्नशिप का अंतिम और समापन दिवस था। इस दिन हमने एक अनुभव साझाकरण सत्र आयोजित किया, जहाँ सभी ने अपने–अपने अनुभवों और सीखों को साझा किया। उस सत्र में, भावनाएँ प्रबल थीं। हम सभी इतने दिनों में एक–दूसरे के इतने करीब आ गए थे कि विदाई का विचार ही हमें भावुक कर रहा था। हँसी, आँसू और आत्मीयता का एक मिश्रण था वह सत्र। हमने एक–दूसरे को यह एहसास कराया कि यह केवल एक इंटर्नशिप नहीं थी, बल्कि यह जीवनभर के लिए एक परिवार बन गया था।

1 फरवरी को, मैंने प्रयागराज को अलविदा कहा। वापसी की यात्रा में, मुझे एक नारा याद आया जो हम अक्सर दिया करते थे – "अलग भाषा, अलग वेश – फिर भी अपना एक देश।" यह नारा, उस दिन, मेरे लिए एक गहरी और ठोस सच्चाई बन गया। मैं पूर्वोत्तर भारत से आने वाली अकेली इंटर्न थी, और बाकी सभी साथी देश के विभिन्न हिस्सों से थे – हमारी भाषाएँ, हमारी वेशभूषाएँ, और हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग थीं। लेकिन महाकुंभ के इन कुछ दिनों में, हमने जो बंधन साझा किया, वह शब्दों से परे था। उस दिन मैंने वास्तव में भारत की विविधता में एकता को अनुभव किया। यह सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभव था जिसने मेरे दिल में राष्ट्र की भावना को और गहरा कर दिया।

आभार

अंत में, मैं 'SHoDH भारत' और विशेष रूप से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, असम को इस अद्भुत अनुभव के लिए हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूँ। महाकुंभ, प्रयागराज में बिताए ये दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार और परिवर्तनकारी अनुभवों में से एक रहेंगे।

संदर्भ

1. Bhardwaj SM. Religious bathing in the Ganges: A study in cultural geography. чних, 1983.
2. Economic Times. Kumbh Mela 2025 expected to boost local economy, 2024. www.economictimes.indiatimes.com
3. Mac Gowan C. The Kumbh Mela: Mapping the Ephemeral City, 2019 आई.बी. टॉरिस.
4. Parashar P. Kumbh Mela: The World's Largest Religious Gathering. Geography and You,2013:13(7):46-51.
5. The Hindu. Extensive arrangements underway for Kumbh Mela 2025 in Prayagraj, 2024. www.thehindu.com
6. Times of India. Prayagraj Mahakumbh 2025 likely to be held between January and March, 2024. www.timesofindia.indiatimes.com
7. Trautmann TR. Aryans and British India, 2006. परसेअस बुक्स ग्रुप.